

HARIV. 6344. प्रणयानत MBh. 5, 7509. प्रणयानत VID. 44. पादानत bis zu Jmdes Füßen sich verneigend KATHAS. 8, 31, 17, 99. AMAR. 35. मुनिमानतो ऽस्मि ich verneige mich vor BHAG. P. 1, 2, 2. आनतसामत देश) demüthig sich verneigend, unterworfen M. 7, 69. आनतेनाथ मूलेन पाणिना vermittelt der Hand niedergebeugt MBh. 12, 10676. फलभारानत (द्रुम) R. GORR. 2, 56, 9. RT. 6, 3. VID. 209. KIR. 5, 25. eingebogen: घूप CAT. Br. 11, 7, 3. eingesunken, nicht hervorstehend, vertieft, flach: वाणेनानतपर्वणा MBh. 1, 1667. R. 1, 1, 64. — 2) sich herbeilassen: आ नो रुद्रस्य सूनवो नमताम् RV. 6, 49, 4. — 3) beugen: (मरुतः) मरुः मरुत् आ नमति RV. 7, 86, 19. herbeineigen, herbeiziehen: आ व इन्द्रं नमो गिरा नेमिं तष्टेव 32, 20. 8, 64, 5. 1, 139, 9. 6, 51, 9. स वेद देव आनमं (absol.) देवां संतापते दमै 4, 8, 3. — caus. niederbeugen: आनाम्य फलितां शाखाम् MBh. 1, 5561. स्तनभारानामिता: (योपितः) BHART. 3, 57. sich beugen machen, unterwerfen: बलाञ्छानम्य दुर्वलान् MBh. 4, 967. विदर्भपतिमानमितं बलैश्च MĀLAV. 78. धनुः den Bogenspannen: आनाम्य MBh. 1, 7088. R. 3, 33, 90. HARIV. 9441. आनाम्यमान 4806. — Vgl. आनत, आनम्य, आनाम्य, डुरानम.

— उद् 1) sich in die Höhe richten, sich erheben (eig. und übertr.): उन्नमत्पीनितुङ्गपयोधरा PRAB. 70, 14. उन्नम्योन्नम्य तत्रैव दरिद्राणां मनोरथाः । हृदयेषु विलीयते विधवास्त्रीस्तनाविव ॥ PĀNĀT. II, 98. उन्नमति नमति वर्षति गर्जति मेघः करोति तिमिरौघम् । प्रथमश्रीरिव पुरुषः करोति त्रयाण्यनेकानि ॥ MĀKĀH. 83, 11. उन्नमत्पकालडुर्दिनम् es erhebt sich ein Unwetter 76, 2. नम्रतेनोन्नमत्: BHART. 2, 59. RĀGA-TAR. 4, 161. उन्नत in die Höhe gerichtet, in die Höhe gehend, erhöht, hoch, hervorstehend, gewölbt, erhaben: °चरण HIT. 76, 6. नतोन्नतध्रुवा DRAUP. 5, 1. VARĀH. BRH. S. 4, 8, 9. 11, 46. Çiç. 9, 79. शस्य JAVANEÇV. 7 in Z. f. d. K. d. M. 4, 345. चतुरङ्गलमुन्नतः MBh. 7, 8750. सर्वोन्नतेन — आत्मना RAGH. 1, 14. विपडुन्नते: पयोर्द्वितम् VARĀH. BRH. S. 19, 15. °सानु KIR. 5, 15. सौधाल-पैरुन्नता: (ग्रामाः) Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 10, ÇI. 36. सिंहान्नतां MBh. 4, 233. 2303. 7, 1368. R. 5, 14, 17. BHAG. P. 4, 20, 22. घोषोन्नतं मुखम् MĀKĀH. 144, 18. कूर्मपृष्ठोन्नत MBh. 3, 1828. VARĀH. BRH. S. 66, 6. 67, 2. उत्तरः कुन्तिरुन्नततरः CAT. Br. 7, 5, 4, 38. नितम्बोन्नतपीवर MBh. 3, 1826. पयोधर, स्तन BHART. 1, 41. MĀLAV. 24. RT. 1, 7. BRAHMA-P. in LA. 31, 15. SĀH. D. 42, 4. °नाभि HALĀ. im ÇKDR. दत्त P. 5, 2, 106. उन्नतदत्त आलभते ved. Çit. beim Sch. zu P. 5, 4, 142. यडुन्नतं भूयाः SHADY. Br. 2, 10. KĀTH. 25, 2. KAUC. 83. निमोन्नतसम SUÇR. 1, 23, 5. 130, 10. HIT. II, 109. उन्नतानत AK. 3, 2, 19. H. 1468. नतोन्नत ÇĀK. 90. विष-नोन्नत H. 1468. अत्युन्नत ÇĀK. 56, v. l. SUÇR. 1, 26, 1. ऐवोन्नत (देवयजन), त्र्यु-न्नत eine —, drei Erhöhungen habend TS. 6, 2, 6, 2, 3. त्रिरुन्नतं (ÇĀMĀ. : त्रीण्युन्नतानि उरोग्रिवाशिरोसि उन्नतानि यस्मिन् तत्) स्थाप्य समं शरी-रम् ÇVETĀÇV. UP. 2, 8. Oft ist von sechs hervorragenden oder gewölbten Theilen des Körpers als einer Zierde die Rede: षडुन्नता MBh. 4, 253. R. 5, 32, 12. उन्नतेषून्नता षट् MBh. 5, 3939. कुन्ता (!) नखा नासिकास्यं (!) कृकाटिका चेति षडुन्नतानि VARĀH. BRH. S. 87 (!). Man vermisst bei die-ser Aufzählung Stirn, Schultern, Brust, Hüften. — hoch, hochste-ehend, hervorragend, erhaben, eminent; in übertr. Bed.: उन्नतो (v. l. für उच्छ्रितो) निपतनम् (प्राप्नोति) NAVAR. 2 in HAEB. Anth. 1. RĀGA-TAR. 3, 284. 4, 611. 5, 190. गुणोन्नत 4, 113. भावोन्नता SĀH. D. 41, 18. उपासि-

तगुरुप्रज्ञाभिमानोन्नताः BHART. 3, 52. मानोन्नतचित्त PĀNĀT. 24, 17. उन्न-तात्तम् RĀGA-TAR. 1, 158. 3, 254. 5, 6. स्वभावोन्नतभावत्वात् HARIV. 6318. °विक्रम R. 1, 16, 21. उन्नतेष्क RAGH. 6, 71. °श्री KATHAS. 2, 83. उन्नत m. Bez. eines besonders grossen oder grosshöckerigen Stiers VS. 24, 7. TS. 2, 1, 5, 1. LĪṬṬ. 1, 6, 44. उन्नत n. Erhebung, Steigung im Gegens. zu नत Senkung SŪBJAS. 12, 72. — 2) aufrichten: पातयितुमस्ति शक्तिर्वयोर्वर्त्तं न चोन्नमितुम् PĀNĀT. I, 407. — Vgl. उन्नति figg. — caus. emporrichten, aufrichten, erheben: उन्नम्य वदनं भीरुः शिंशया तामुदत्तत R. 5, 30, 12. कदा नु चारुदत्तौष्ठं तस्याः पद्मनिभं मुखम् । ईषडुन्नम्य पश्यामि 73, 12. VA-RAH. BRH. S. 93, 13. KATHAS. 25, 148. उन्नम्य कंधराम् VID. 22. मुखमुन्नम्य KUMĀRAS. 7, 23. BHAG. P. 3, 17, 10. मुखमुन्नमयितुम् ÇĀK. 108, 5, v. l. MĀ-LAV. 73. उन्नम्य मुखम् JĀGĒ. 3, 198. MBh. 7, 6222. उन्नमित SUÇR. 1, 359, 8. VIKR. 81. ÇĀK. 63, 73. RAGH. 1, 41. RĀGA-TAR. 4, 521. उन्नमित SUÇR. 1, 359, 10. MĀRK. P. 39, 30. उन्नमितः खड्गः HIT. 100, 2. लघून्नमयन्भावा-न्युन्नप्यवपातयन् । वातुं विधिरिवारिभे प्रचाड्य प्रभञ्जनः ॥ KATHAS. 25, 42. स्वपार्श्विनापीड्य गुदं ततो ऽनिलं स्थानेषु षट्त्रयमप्युन्नतः ॥ BHAG. P. 2, 2, 19.

— अयुद्, partic. अयुन्नत emporgerichtet, in die Höhe gehend, gewölbt: स्थूलायुन्नतकाष्ठः (खञ्जनः) VARĀH. BRH. S. 44 (43), 2. ललाट 67, 72. अयुन्नत KUMĀRAS. 1, 33. अयुन्नता पुरस्तादवगाढा नघनगौरवात्प-श्चात् । हारे ऽस्य पाण्डुसिकते पदपङ्क्तिर्दृश्यते ऽभिनवा ॥ ÇĀK. 56.

— सम-युद् sich erheben: मेघैः सम-युन्नतैः MĀKĀH. 76, 20.

— प्रोद्, partic. प्रोन्नत stark hervorragend, sehr hoch: पुंसो यथाङ्गेषु सिरास्तथैव क्षितावपि प्रोन्नतनिमग्नसंस्थाः VARĀH. BRH. S. 53, 1. °स्थान PĀNĀT. 118, 9. überlegen: अचलः प्रोन्नतं शत्रुं यो याति मर्मोद्धितः । युद्धार्थम् I, 387. बल° an Macht überlegen 267. — caus. in die Höhe rich-ten: प्रोन्नम्य चैनाम् SUÇR. 1, 60, 15. प्रोन्नमितो ऽङ्घ्रिः BHAG. P. 8, 21, 3.

— समुद् sich erheben: समुन्नतः पयोधराः BHART. 7, 1. समुन्नत in die Höhe gerichtet, hoch, gewölbt, hervorragend: °लाङ्गुल HIT. 76, 6. उत-रोष्ठेन समुन्नतेन (कलकप्रिया) VARĀH. BRH. S. 68, 23. अश्मयु 67, 57. प्रूरेश्वरं प्रतिष्ठाप्य स्ववेषमेव समुन्नतम् RĀGA-TAR. 5, 38. हृदयं समुन्नतं पथुतरम् VARĀH. BRH. S. 67, 28. कूर्म° 68, 3. गुरुसमुन्नतपीनपयोधरा AMAR. 51. MĀ-LAV. 42. अथवा ते विरजिते प्रमाणेन समुन्नतौ R. 3, 32, 30. hoch, erhaben in übertr. Bed.: स्वभावात्पार्थिवता समुन्नता KĀM. NĪTIS. 1, 64. — caus. emporrichten, aufheben, in die Höhe heben, aufstreben: मुखमस्याः समु-न्नमयितुमिच्छति ÇĀK. 40, 16. मुखं किञ्चित्समुन्नम्य MBh. 7, 8859. समुन्ना-म्य च पुत्रकम् 15, 645. व्रणं समुन्नम्य SUÇR. 1, 93, 14. त्वचः समुन्नम्य शनैः समन्ताद्विवर्धमानो नठरं करोति 273, 11.

— उप kommen zu, sich einstellen bei, zu Theil werden; mit dem acc. der Person: उपैनं मरुत्तं नमति AIT. Br. 5, 14. 1, 4, 5. यं सन्निया दी-तोपनमेत् 4, 26. यदेवैनं यज्ञ उपनमेत् अथादधीत wenn ihn ankommt zu opfern TBR. 1, 1, 2, 8. उपैनमुत्तरो यज्ञो नमति fällt ihm zu 8, 4. 9, 7, 8. 8, 3, 3. ततो वै तामन्नाद्यमुपानमत् TS. 1, 3, 4, 2. यमलं राव्याय सत्तं राव्यं नोपनमेत् 2, 1, 3, 4. AIT. Br. 8, 26. यं कामो नोपनमेत् TS. 2, 2, 3, 1. VS. 26, 2. ÇAT. Br. 2, 1, 3, 9. 4, 19, 21. 3, 1, 3, 3. अयायो रू यदेनं साधवो धर्मा आ च गच्छेत्पुरुष च नमेयुः KHĀND. UP. 2, 1, 4. कान्वापदो नोपनमति MBh. 12, 8201. mit dem dat. der Person: यदा तु पराधयान्ध आत्मने नोपन-मति BHAG. P. 5, 14, 14. mit dem gen. der Person: अकृच्छूलङ्घ्याः पन्था-